ममतामयी दादी जी

इस दुनिया में अनेक लोग आते हैं और जाते हैं। उनमें से कई अपने श्रेष्ठ कर्मों के द्वारा अमर हो जाते हैं। दादी प्रकाशमणि जी भी ऐसी ही अद्वितीय महान आत्मा थी जो धर्मग्लानि के समय अनेक मनुष्यात्माओं को श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा और मार्गदर्शन देने के लिए ईश्वरीय देन थी। दादी जी माना ही स्वयं परमात्मा द्वारा फुरसत में बनाया हुआ कोहिनूर हीरा।

मैंने पिछले 20 वर्षों से दादी जी को नज़दीक से देखा है। मैंने तो परमात्मा के साथ सर्व संबंधों की अनुभूति दादी जी के द्वारा ही की है। दादीजी युवाओं के साथ युवा, बुजुर्गों के साथ बुजुर्ग, बच्चों के साथ बच्चा बन जाती थी। इस विशेषता के कारण वे सभी को अपनी लगती थी। सभी को परमात्मा की तरफ आकर्षित करना, सभी को उमंग-उल्लास में लाना – दादी जी में यह कला थी। उनकी मधुर मुस्कान सभी समस्याओं को, दु:ख व अशांति को भुला देती थी। सभी प्रकार की जिम्मेवारियाँ होते हुए भी वे सदा हल्की रहती थी।

मैं दिल्ली से जब शांतिवन में आया था तब मुझे किचन में भोजन बनाने की जवाबदारी मिली थी। इस कारण रोज़ दादी कॉटेज में दादी जी के पास भोजन का मीनू पूछने जाता था। इस कालावधि में मैंने बहुत नज़दीक से यह देखा कि दादी जी का दिल कितना विशाल और ममतामय था। दादी जी के पास रोज़ के सामान्य भोजन का डिब्बा जाता था, दादी जी उस भोजन को स्वयं चखती थी। अगर भोजन में कुछ कम-ज्यादा हो तो दादी जी हमें पास बुलाकर बड़े प्यार से बता देती थी। भोजन अच्छा बनने के बाद और अधिक प्यार करती थी। स्वयं अपने हाथों से भोजन की गिट्टी खिलाती थी। इस प्यार भरे व्यवहार के कारण हमारे में भोजन बनाने की कला आती गई। दादी जी भोजन का मीनू ऐसा बनाती थी जो सभी को पसंद आये। एक बार महाराष्ट्र के 15 हजार भाई-बहनें बापदादा को मिलने के लिए आये थे। मैं जब भोजन का मीनू पूछने दादी जी के पास गया तब दादी जी ने कहा, पूरणपोली बनेगी। अचानक और इतने लोगों के लिए पूरणपोली तो असंभव है – यह सोचकर मैं चुपचाप दादी जी की तरफ देखता रहा। दादी जी ने शक्तिशाली दृष्टि दी तो मेरे में इतनी हिम्मत आयी जो मैंने कहा, हाँ जी, ज़रूर बनायेंगे। सारी रात जागकर पूरणपोली बनायी गई। दूसरे दिन पूरणपोली देखकर दादी जी बहुत खुश हुई। कहने का भाव है कि दादी जी केवल निर्देश नहीं देती थी बल्कि साथ में शक्ति भी देती थी जिससे तन-मन की थकान मिट जाती थी और उस कार्य को करने की शक्ति आ जाती थी।

दादी जी हमेशा क्लास में परिवार की भासना देती थी। सभी को पूछती थी, आपको क्या भोजन पसंद है, वह बताओ, मैं वही बनाकर खिलाऊँगी। दादी जी के अंदर सभी के प्रति आत्मिक प्यार था। एकानॉमी की अवतार थी। सभी भाई-बहनों को दादी जी खुश करती थी। जब बरसात का विशेष मौसम रहता था तो दादी जी कहती थी, गरम-गरम पकौड़े या हलुवा सभी को मिलेगा। कभी-कभी बरसात के दिनों में, पहाड़ी झरने दिखाने, बरसाती कोट पहनकर स्वयं आती थी। पिकनिक कराने, कुछ खेल कराने ले जाती थी। दादी जी केवल ज्ञान सुनाने का ही कार्य नहीं करती थी बल्कि हर प्रकार से हमें अलौकिक पालना देती थी। दादी जी के द्वारा मित्र, सखा, बंधु, टीचर, पालक, माँ – ऐसे अनेक संबंधों से पालना का अनुभव होता था। जब दादी जी मुरली सुनाती थी तब जैसे कि परिवार में वार्तालाप कर रही हैं, ऐसा महसूस होता था। दादी जी को सभी विभागों का ज्ञान था। दादी जी सभी वर्गों को प्रेरणा देती थी। दादी जी ने ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रखा। ब्रह्मा बाप समान सभी को यज्ञ में पालना दी। दादी जी माना ही मानव मात्र को कैसे रहना चाहिए, उसका उदाहरण थी। दादी जी का सभी से प्यार था परंतु लगाव किसी से नहीं था। दादी जी हमेशा पूछती थी, रहने के लिए जगह ठीक मिली है? आते समय तकलीफ तो नहीं हुई? आप यहाँ गेस्ट (मेहमान) नहीं, अपने घर में आये हो। इन शब्दों से अपनापन महसूस होता था। दादी जी में था निमित्त भाव, निर्माण भाव और उनकी निर्मल वाणी थी।

❑❑